IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

# भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन

रागिनी गुप्ता[1] व डॉ. सुशीला द्विवेदी[2]
शोधार्थी, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, म.प्र.[1]
प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय रायपुरकर्चुलिया, रीवा, म.प्र.[2]

**शोध–सारांशः**

मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है। वह प्रकृति द्वारा प्रदत्त सभी तत्वों का अपने हित में स्वेच्छानुसार संसाधन के रूप में प्रयुक्त करता है, जिनमें से एक भूमि संसाधन है। भूमि वस्तुतः पृथ्वी पर विकसित महाद्वीपीय धरातल का वह भाग है, जिसमें मनुष्य न सिर्फ निवास करता, अपितु उसकी समस्त सामाजिक–आर्थिक क्रियायें इस पृष्ठीय भाग में ही संचालित होती है। उच्चावच की दृष्टि इसके निम्नांकित 3 वर्ग हैं–1. पर्वतीय भूमि, 2. पठारी भूमि, 3. मैदानी भूमि।

उपर्युक्त भूमि के तीनों प्रकारों में पर्वतीय भूमि की ऊँचाई एवं उच्चावचीय विषमतायें सबसे अधिक होती हैं, जबकि मैदानी भूमि समतल–सपाट एवं समुद्र की सतह से 600' फीट से कम ऊँचाई वाले होते हैं। उक्त बिन्दुओं को इस शोध पत्र में उल्लेख करने का प्रयास है।

**मुख्य शब्द** :– भूमि, उपयोग, प्रभावित, तत्वों,उच्चावच, धरातल, संसाधन आदि।

**प्रस्तावनाः**

हनुमना विकासखण्ड के ग्राम पंचायत सीमा के अंतर्गत लगभग समांग भूमि क्षेत्र का विस्तार पाया जाता है। जहाँ तक भूमि उपयोग का प्रश्न है वह मानव एवं भूमि संसाधन के अंतरक्रियाओं का प्रतिफल है।[1] यह मनुष्य के लिये एक संसाधन है, जिसका उपयोग आवश्यकता एवं तकनीकी ज्ञान के अनुरूप वह प्राचीन काल से करता चला आ रहा है। उदाहरणार्थ, जब उसकी आवश्यकताएँ सीमित थीं तथा तकनीकी दृष्टि से पिछड़ा था, भोजन की आपूर्ति शिकार, कन्द–मूल, फल एवं आवास के लिये गुफाओं का सहारा लेता था, उन दिनों भूमि के उपयोग में कोई विविधता नहीं थी। भोजन, पानी, आश्रय की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वनभूमि, जलाशय में प्रयुक्त भूमि, आवास के लिये प्रयुक्त भूमि के ही सम्वर्ग थें। धीरे–धीरे मानव की तकनीकी दक्षता, आर्थिक विकास एवं जनसंख्या की वृद्धि ने भूमि उपयोग में विविधता उत्पन्न की।[2] वर्तमान में भूमि उपयोग के अनेक वर्ग है। जनगणना वर्ष 1991 एवं 2001 के अनुसार भूमि उपयोग के विभिन्न वर्ग निम्नानुसार हैं[3]–1. वन भूमि, 2. पड़ती भूमि, 3. बंजर गोचर भूमि, 4. अन्य भूमि, 5. कृषित भूमि–के अन्तर्गत (i) एक फसली कृषि भूमि एवं (ii) दो फसली कृषि भूमि।

ग्रामीण पटवारी प्रपत्र जिसमें किसी ग्राम के भूमि उपयोग का विस्तृत विवरण दर्शाया जाता है, में भूमि उपयोग के निम्न सम्वर्ग पाये जाते हैं[4]–

पटवारी पत्रक के अनुसार भूमि उपयोग के सम्वर्ग–

| क्र. | सम्वर्ग |
|---|---|
| 1. | नाला |
| 2. | ताल |
| 3. | तालाब |

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-15572

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

| | |
|---|---|
| 4. | पशु विश्राम |
| 5. | पाट |
| 6. | रास्ता |
| 7. | पहाड़ |
| 8. | वन |
| 9. | एक फसली / दो फसली |
| 10. | चालू पड़ती |
| 11. | पड़ती 2 साल से अधिक |
| 12. | पड़ती 5 साल से अधिक |
| 13. | निरा–बोया क्षेत्र |
| 14. | बगीचा |
| 15. | अन्य |
| 16. | अन्य शासकीय इमारत |
| 17. | आबादी (गाँव) |
| 18. | खलिहान |
| 19. | टीला |
| 20. | स्कूल–निस्तार |

**स्रोतः–** पटवारी पत्रक पर आधारित, 2021

उपर्युक्त दोनों प्रकार के भूमि उपयोग के वर्गीकरण में मूलभूत अंतर नहीं है। पटवारी द्वारा तैयार किये गये विवरण विशेषीकृत हैं, जिनका विवरण जनगणना पुस्तिका में 'अन्य सम्वर्ग' के अंतर्गत समाहित है।

**भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले तत्व :**

**1. भौतिक तत्वः–**भौतिक तत्व भूमि उपयोग को एक निश्चित दिशा देने में काफी महत्वपूर्ण होते हैं। भूमि उपयोग की सीमा कृषि प्रकार एवं अन्य कृषि की जटिलताएँ भौतिक दशाओं के विभिन्न रूपों द्वारा निर्धारित होती है। किसी भी क्षेत्र में कृषि का विकास वहाँ के प्राकृतिक वातावरण और भौतिक पर्यावरण पर निर्भर करता है। कृषि की दशाएँ प्रधान रूप से भौतिक पर्यावरण के अंतर्गत ही जन्म लेती हैं।

भौतिक वातावरण के अंतर्गत जलवायु, वर्षा, तापमान, पानी, भूमि, मिट्टियाँ, प्राकृतिक वनस्पति आदि को सम्मिलित किया जाता है जो भूमि उपयोग को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करती है। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड एक पठारी क्षेत्र है, किन्तु इसके उत्तरी–पूर्वी एवं दक्षिणी पार्श्व में कगारी ढाल पाया जाता है। फलतः भौतिक दृष्टि से उच्चावचीय विषमताओं के कारण गहरी मृदा के निक्षेप का अभाव है, जिसके कारण कृषि कार्य अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सका है।[5]

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

**2. आर्थिक कारकः–**भौतिक तत्वों के समान आर्थिक तत्व भी किसी क्षेत्र के भूमि उपयोग को प्रभावित करते हैं। किसी क्षेत्र के भूमि उपयोग का प्रारूप वहाँ की भूमि व्यवस्थाओं पर निर्भर होता है तथा उनका प्रभाव कृषि से उत्पादित वस्तुओं पर पड़ता है। इसके विपरीत कृषकों की आर्थिक स्थिति एवं अपर्याप्त पूँजी आदि का प्रभाव भूमि पर पड़ता है। इन सब के अभाव में अच्छी किस्म के बीज, खाद, उपकरण, औजार आदि की सुव्यवस्था नहीं हो पाती। इसीलिए इनके अभाव में कृषि का विकास नहीं हो पाता। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में लगभग 49.77 प्रतिशत भाग पर कृषि कार्य किया जाता है किन्तु अभी तक इस भू–भाग में सिंचित क्षेत्र मात्र 35 प्रतिशत के लगभग पाये जाते हैं। इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र में उन्नति कृषि के अभाव में लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने से प्रति हेक्टेयर रासायनिक उर्वरक एवं उपचारित बीजों का संतुलित प्रयोग नहीं हो पाता। जिसका प्रभाव अध्ययन क्षेत्र के सकल कृषि उत्पादन तथा क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों की अर्थव्यवस्था पर स्पष्टतः अंकित मिलता है।

**3.संस्थागत कारकः–**विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं को जिनमें धार्मिक समाज, रीति–रिवाज, मानव समूह के जातिगत गुण, उनके तौर–तरीकों के अलावा प्रमुख रूप से काश्तकारी, खेतों का आकार, भूमि स्वामित्व जैसे तथ्यों को इसके परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। क्योंकि विभिन्न सामाजिक समूहों की अपनी अलग व्यवस्थाएँ होती है तथा इन्हीं परिप्रेक्ष्य में भूमि का उपयोग किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड सामान्य जनसंख्या विपुल क्षेत्र है, जहाँ हिन्दूवादी परम्परा के अंतर्गत परिवार के हर सदस्य को खेत के हर खाते में हिस्सा प्रदान किया जाता है। फलतः खेतों का आकार उत्तरोत्तर छोटा होता चला जाता है, जो कृषि कार्य एवं रख–रखाव की दृष्टि से बेहद ही अनार्थिक है, किन्तु सामाजिक परम्पराओं के अनुसार इस प्रकार का प्रचलन अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग को प्रभावित करता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

**हनुमना विकासखण्ड में वर्तमान भूमि उपयोग प्रारूपः–** रीवा जिले के हनुमना विकासखण्ड में अध्ययन की सुविधा के आधार पर भूमि उपयोग को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–1. वन, 2. कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि, 3. बंजर–पड़ती भूमि, 4. कृषि योग्य भूमि, 5. शुद्ध बोया गया क्षेत्र, 6. दो फसली क्षेत्र, 7. सिंचित क्षेत्र।

अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में भूमि उपयोग के उपर्युक्त सभी सात सम्वर्ग पाये जाते हैं। यद्यपि भूमि उपयोग के सभी सातों सम्वर्गों में प्रयुक्त भूमि के क्षेत्रफल की मात्रा अलग–अलग पायी जाती है, जैसा कि निम्नांकित सारणी क्रमांक–2.1 से स्पष्ट होता है–

**परिशिष्ट क्रमांक–1**

**हनुमना विकासखण्ड में भूमि उपयोग का रा.नि.म. वार स्वरूप (हेक्टेयर में) 2022**

| क्र. | रा.नि.मं. | क्षेत्रफल (किमी.) | वन (हेक्टेयर) | प्रतिशत | बंजर हेक्टेयर + 2 | प्रतिशत | पड़ती हेक्टेयर चालू वर्ष +2+5 वर्ष | प्रतिशत | कृषि के अति. अन्य उपयोग हेक्टेयर | प्रतिशत | कृषि योग्य हेक्टेयर + 2 | प्रतिशत | कुल फसली हेक्टयर | प्रतिशत | द्विफसली हेक्टेयर + 2 | कुल कृषि योग्य क्षेत्र से प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पहाड़ी | 15398.887 | 1304 | 8.51 | 1869 | 12.14 | 1364 | 8.86 | 1511 | 9.81 | 8665 | 56.27 | 11665 | 100.00 | 3000 | 34.62 |
| 2. | शाहपुर | 12185.12 | – | – | 1143 | 9.38 | 1071 | 8.79 | 1278 | 10.49 | 8347 | 68.50 | 11853 | 100.00 | 3506 | 42.00 |
| 3. | खटखरी | 18721.211 | – | – | 1802 | 9.62 | 3901 | 23.25 | 1930 | 10.32 | 10063 | 56.95 | 13571 | 100.00 | 2854 | 28.36 |
| 4. | हनुमना | 20223.267 | 3222 | 15.93 | 2642 | 13.06 | 3612 | 17.86 | 1469 | 7.26 | 8750 | 43.28 | 11860 | 100.00 | 3110 | 35.54 |
| 5. | पिपराड़ी | 32163.0180 | 6158 | 19.14 | 6130 | 19.06 | 3572 | 21.23 | 1667 | 5.18 | 13290 | 41.31 | 18079 | 100.00 | 4789 | 36.03 |
| 6. | हनुमना विकासखण्ड | 98671.566 | 10684 | 10.83 | 13586 | 13.76 | 13521 | 13.70 | 7855 | 7.96 | 49115 | 49.77 | 67028 | 100.00 | 17259 | 35.14 |

स्रोतः– राजस्व निरीक्षक पहाड़ी, शाहपुर, खटखरी, हनुमना एवं पिपराही से प्राप्त जानकारी पर आधारित वर्ष 2022

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–1 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड हनुमना में 10.83 प्रतिशत वन, 13.76 प्रतिशत बंजर गोचर भूमि, 13.70 प्रतिशत पड़ती भूमि, 07.96 प्रतिशत कृषि के लिये अनुपलब्ध भूमि तथा 49.77 प्रतिशत कृषित भूमि है। कुल कृषित भूमि में 64.86 प्रतिशत एक फसली भूमि एवं 35.14 प्रतिशत दो फसली क्षेत्र है।

**1. वन :–**भूमि उपयोग के निर्धारण में वनों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वन भूमि की उर्वरता एवं संरक्षण के लिए वन अत्यन्त आवश्यक होते हैं। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में वन का प्रतिवेदित क्षेत्रफल 10684 हेक्टेयर है, जो अध्ययन क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल का 10.83 प्रतिशत भाग है, जो मध्य प्रदेश राज्य के कुल वन क्षेत्र 30.72 प्रतिशत एवं रीवा जिला के वन क्षेत्र 17.85 प्रतिशत से बहुत कम है, जैसा कि निम्नांकित सारणी क्रमांक 2.2 से स्पष्ट होता है–

**सारणी क्रमांक–2**

**वन क्षेत्र का प्रतिशत**

| क्र. | क्षेत्र/प्रदेश/क्षेत्रफल हेक्टेयर में | क्षेत्रफल वर्ग किमी. में | कुल क्षेत्रफल से वन क्षेत्र का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | मध्यप्रदेश | 94689 | 30.72 |
| 2. | रीवा जिला | 1117.94 | 17.85 |
| 3. | हनुमना विकासखण्ड | 10684 | 10.83 |

स्रोतः– सांख्यिकी पुस्तिका जिला–रीवा 2022

अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में स्थित पाँच राजस्व निरीक्षक मण्डलों में वन क्षेत्र के वितरण में पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगोचर होती है, जैसा कि निम्नांकित सारणी क्रमांक 2.3 से स्पष्ट होता है–

**सारणी क्रमांक–3**

**विकासखण्ड हनुमना (जिला–रीवा) के वनक्षेत्र का विवरण 2022**

| क्र. | विवरण रा.नि.मं. | वनक्षेत्र हेक्टेयर में | रा.नि.मं. के कुल क्षेत्र से प्रतिशत | विकासखण्ड के कुल वनक्षेत्र से प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1. | पहाड़ी | 1304.00 | 8.51 | 13.49 |
| 2. | शाहपुर | निरंक | 00 | 00 |
| 3. | खटखरी | निरंक | 00 | 00 |
| 4. | हनुमना | 3222.00 | 15.93 | 33.34 |
| 5. | पिपराही | 6158.00 | 19.14 | 63.73 |
| **विकासखण्ड हनुमना** | | 10684.00 | 10.83 | 100.00 |

स्रोतः– पटवारी पत्रक पर आधारित संबंधित रा.मं.निं. के राजस्व निरीक्षकों से प्राप्त जानकारी, वर्ष 2022

उपर्युक्त सारणी क्र. 3 के अनुसार हनुमना विकासखण्ड के पिपराही हनुमना एवं पहाड़ी राजस्व निरीक्षक मण्डलों में वनों का विस्तार पाया जाता है। अन्य दो राजस्व निरीक्षक मण्डलों में वर्ष 2022 में उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार कोई वन भूमि नहीं है। पिपराही रा.नि.मं. में सम्मिलित सभी पटवारी हल्कों में वन भूमि का विस्तार 6158 हेक्टेयर सर्वाधिक है जो हनुमना विकासखण्ड के कुल वनक्षेत्र का 63.73 प्रतिशत भाग है। इस विकासखण्ड में वनों की अधिकता का प्रमुख कारण कैमूर श्रेणी की पहाड़ियों का होना है।

**2. कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमिः–**किसी क्षेत्र में उपलब्ध भूमि का वह भाग जो कृषि कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यों में प्रयुक्त किया जाता है अथवा प्राकृतिक कारणों से कृषि कार्य हेतु उपलब्ध नहीं होता, वह भूमि इस सम्वर्ग में शामिल होती है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में इस सम्वर्ग के अंतर्गत उस भूमि को सम्मिलित किया है, जो आबादी, सड़क, तालाब, नदी एवं अन्य जलाशय, श्मशान, बाग–बगीचे आदि के रूप में प्रयुक्त होती है। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में इस सम्वर्ग में 7855 हेक्टेयर भूमि है जो विकासखण्ड के कुल क्षेत्रफल का 7.96 प्रतिशत भाग है। हनुमना विकासखण्ड में रा.नि.मं. अनुसार विभिन्न ग्रामों में इस सम्वर्ग की भूमि परिवर्तनशील प्रवृत्ति की पाई जाती है, जैसा कि निम्नांकित सारणी क्र. 4 से स्पष्ट होता है–

**सारणी क्रमांक–4**

**हनुमना विकासखण्ड में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि–2022**

| क्र. | रा.नि.मं. | क्षेत्रफल हेक्टेरों में | क्षेत्रफल रा.नि.मं. से प्रतिशत | कुल कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि से प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1. | पिपराही | 1667 | 05.18 | 21.22 |
| 2. | हनुमना | 1469 | 07.26 | 18.70 |
| 3. | खटखरी | 1930 | 10.32 | 24.57 |
| 4. | शाहपुर | 1278 | 10.49 | 16.27 |
| 5. | पहाड़ी | 1511 | 09.81 | 19.23 |
| योग हनुमना वि.खं. | | 7855 | 7.96 | 100.00 |

स्रोतः– संबंधित राजस्व निरीक्षक पत्रक से प्राप्त जानकारी, वर्ष 2022

उपर्युक्त सारणी क्र. 4 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में कृषि के लिये अनुपलब्ध कुलक्षेत्र 7855 हैक्टर के 24.57 प्रतिशत भाग खटखरी राजस्व निरीक्षण मण्डल में पाई जाती है जो अन्य सभी राजस्व निरीक्षक मण्डलों की तुलना में सबसे अधिक है, जबकि अध्ययन क्षेत्र की शाहपुर रा.नि.मं. में उक्त भूमि का अंश 16.27 प्रतिशत है। शाहपुर रा.नि.मं. में विकासखण्ड का उक्त न्यून प्रतिशत का कारण अध्ययन क्षेत्र के सबसे छोटे रा.नि.म. होने के कारण है, जब कि रा.नि.म. के अंतर्गत इस सम्वर्ग में अन्य रा.नि. मण्डलों से अधिक प्रतिशत मिलता है।

**3. गोचर–बंजर एवं पड़ती भूमिः–**ऐसी भूमि जिसमें पिछले कई सालों से कृषि कार्य न किया गया हो, उसका उपयोग पशुचारण के लिये किया जाता हो ऐसी भूमि, गोचर, बंजर भूमि कहलाती है। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में 13586 हेक्टेयर गोचर बंजर भूमि पाई जाती है, जो विकासखण्ड के कुल क्षेत्रफल के 1376 प्रतिशत भाग है। हनुमना विकासखण्ड में बंजर भूमि के क्षेत्रीय वितरण में राजस्व सर्किल वार आंशिक विषमता दृष्टिगोचर होती है जैसा कि निम्नांकित सारणी क्रमांक से स्पष्ट होता है–

**सारणी क्रमांक .5**

**हनुमना विकासखण्ड में बंजर–गोचर भूमि का वितरण वर्ष–2022**

| क्र. | रा.नि.मं. | कुल क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) | बंजर गोचर भूमि क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) | रा.नि.म. के कुल क्षेत्र से प्रतिशत | विकासखण्ड के बंजर–गोचर भूमि से प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पिपराही | | 6130 | 19.06 | 45.17 |
| 2. | हनुमना | | 2642 | 13.06 | 19.45 |
| 3. | खटखरी | | 1802 | 09.62 | 13.26 |
| 4. | शाहपुर | | 1143 | 09.38 | 08.47 |
| 5. | पहाड़ी | | 1869 | 12.14 | 13.75 |

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **योग हनुमना वि.खं.** | | 13586.00 | 13.76 | 100.00 |

स्रोतः– रा.नि.म. से प्राप्त जानकारी पर आधारित वर्ष 2022

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–5 से स्पष्ट होता है कि हनुमना विकासखण्ड के पिपराही राजस्व निरीक्षक मण्डल में 45.11 प्रतिशत भूमि बंजर है, जो अन्य राजस्व निरीक्षक मण्डलों की तुलना में सर्वाधिक है। सबसे कम गोचर–बंजर भूमि शाहपुर राजस्व निरीक्षक मण्डल में 08.47 प्रतिशत पाई जाती है।

**पड़ती भूमिः–** अन्य क्षेत्रों की भाँति विकासखण्ड हनुमना में कुल भूमि इस प्रकार की पाई जाती हो, जिसे पड़ती छोड़ दिया जाता है। पड़ती सम्वर्ग में तीन प्रकार की भूमि है–1 वर्ष तक की पड़ती (चालू पड़ती भूमि), 2 वर्ष 5 वर्ष की पड़ती, 5 वर्ष से अधिक की पड़ती–

**सारणी क्रमांक–6**

**विकासखण्ड हनुमना जिला–रीवा पड़ती भूमिका वितरण वर्ष–2022**

| क्र. | विवरण रा.नि.म. | पड़त भूमि क्षेत्रफल हेक्टरों में | रा.नि.मं. के कुल क्षेत्रफल से प्रतिशत | विकासखण्ड के कुल पड़त भूमि से प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1. | पहाड़ी | 1364.00 | 08.86 | 10.08 |
| 2. | शाहपुर | 1071.00 | 08.79 | 07.92 |
| 3. | खटखरी | 3901.00 | 20.83 | 28.85 |
| 4. | हनुमना | 3572.00 | 17.60 | 19.02 |
| 5. | पिपराही | 6828.00 | 21.23 | 50.49 |
| **विकासखण्ड हनुमना** | | 13521 | 13.70 | 100.00 |

**स्रोतः–**रा.नि. से प्राप्त जानकारी पर आधारित वर्ष 2022 संबंधित रा.नि.मं. तहसील हनुमना, जिला रीवा (म.प्र.)

अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में सभी प्रकार की पड़ती भूमि का प्रतिवेदित क्षेत्रफल 13521 हेक्टर (सारणी क्र. 2.6) है, जो विकासखण्ड के कुल क्षेत्रफल का 13.70 प्रतिशत भाग है। रा.नि.मण्डलवार विश्लेषण से स्पष्ट है कि पड़ती भूमि का सबसे अधिक 21.23 भाग खटखरी राजस्व निरीक्षक मण्डल में पाया जाता है। जबकि शाहपुर राजस्व निरीक्षक मण्डल में सबसे कम 08. 79 प्रतिशत भूमि पड़ती है। विकासखण्ड के कुल पड़ती भूमि में 50.49 प्रतिशत/भाग पिपराही रा.नि.म. में सबसे अधिक एवं 07.92 शाहपुर रा.नि.म. में सबसे कम पाया जाता है।

**4. निराफसली क्षेत्रः**–निराफसली क्षेत्र किसी भूमि का वह भाग होता है जिसमें प्रतिवेदित अवधि में कृषि कार्य किया गया हो। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में वर्ष 2022 में निरा कृषित क्षेत्र 49115 हेक्टेयर रहा जो विकासखण्ड के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 45.75 प्रतिशत भाग है। शुद्ध बोये गये भूमि का क्षेत्रीय वितरण अध्ययन क्षेत्र में एक समान दृष्टिगोचर नहीं होता है, जैसा कि निम्नांकित सारणी क्रमांक–2.6 से स्पष्ट होता है–

**सारणी क्रमांक–7**

**विकासखण्ड हनुमना जिला–रीवा निराफसली क्षेत्र**

| क्र. | विवरण रा.नि.म. | निराफसली क्षेत्रफल हेक्टरों में | रा.नि.मं. के कुल क्षेत्रफल से प्रतिशत | विकासखण्ड के कुल निराफसली भूमि से प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1. | पहाड़ी | 8665 | 56.27 | 17.64 |
| 2. | शाहपुर | 8347 | 68.50 | 16.99 |

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 3. | खटखरी | 10063 | 56.95 | 20.49 |
| 4. | हनुमना | 8750 | 43.27 | 17.81 |
| 5. | पिपराही | 13290 | 41.32 | 27.05 |
| **विकासखण्ड हनुमना** | | 49115 | 49.77 | 100.00 |

स्रोतः– रा.नि. से प्राप्त जानकारी पर आधारित वर्ष 2022 संबंधित रा.नि.मं. तहसील हनुमना, जिला रीवा (म.प्र.)

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–2.7 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड के सभी 05 राजस्व निरीक्षक मण्डलों में निराफसली क्षेत्र में विभिन्नतायें दृष्टिगोचर होती है। अध्ययन क्षेत्र की शाहपुर राजस्व निरीक्षक मण्डल में शुद्ध बोया गया क्षेत्र कुल क्षेत्रफल का 68.50 प्रतिशत भाग है, जो कि अध्ययन क्षेत्र की अन्य सभी रा.नि.मं. की तुलना में सबसे अधिक प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र की पिपराही रा.नि.मं. में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 41.23 प्रतिशत भाग निराफसली क्षेत्रफल के अंतर्गत समाहित हैं। अध्ययन क्षेत्र के शाहपुर रा.नि.म. में निराफसली क्षेत्र के प्रतिशत की अधिकता का कारण जनसंख्या का कृषि पर निर्भरता का अधिक होना है।

**5. एक फसली क्षेत्र :–** एक फसली क्षेत्र के अंतर्गत वर्ष में सिर्फ एक बार कृषि कार्य किया जा सकता है, अर्थात् एक फसल का उत्पादन ऐसे क्षेत्रों में प्राप्त किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड एक पिछड़ा भूभाग है जहाँ आधुनिक तकनीक द्वारा कृषि कार्य सम्पादन की न्यून मात्रा के कारण एक फसली क्षेत्र की अधिकता पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल के 45143 हेक्टेयर भूमि कृषि कार्य में प्रयुक्त की जा रही है, जिनमें 27884 हेक्टेयर 61.77 प्रतिशत भूमि एक फसली क्षेत्र के अंतर्गत है। अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित पाँच राजस्व निरीक्षक मण्डलों में एक फसली क्षेत्र के वितरण में आंशिक विषमताएँ दृष्टिगोचर होती है जैसा कि निम्नांकित सारणी क्रमांक–7 से स्पष्ट होता है–

**सारणी क्रमांक–8**

**हनुमना विकासखण्ड में एक फसली कृषि क्षेत्र, वर्ष–2022**

| क्र. | रा.नि.मं. | कुल शुद्ध कृषित क्षेत्र | एक फसली क्षेत्र का विवरण | दो फसली | रा.नि.मं. के कृषि क्षेत्र से प्रतिशत | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पहाड़ी | 6350 | 3350 | 3000.00 | 52.76 | 47.24 |
| 2. | शाहपुर | 7230 | 3724 | 3506.00 | 51.51 | 48.49 |
| 3. | खटखरी | 10063 | 7209 | 2854.00 | 71.64 | 28.54 |
| 4. | हनुमना | 8210 | 5100 | 31100.00 | 73.46 | 23.54 |
| 5. | पिपराही | 13290 | 8501 | 4789.00 | 63.87 | 36.13 |
| **योग हनुमना वि.खं.** | | 45143 | 27884 | 17259.00 | 61.71 | 38.23 |

स्रोतः– पटवानी प्रतिवेदन से प्राप्त आँकड़ों पर आधारित 2022

उपर्युक्त सारणी क्रमांक–2.8 से स्पष्ट होता है कि हनुमना विकासखण्ड की हनुमना रा.नि.मं. में कुल कृषित भूमि के सबसे अधिक 73.46 प्रतिशत भाग एक फसली कृषि क्षेत्र है। जबकि न्यूनतम शाहपुर राजस्व निरीक्षक मण्डल में 51.51 प्रतिशत भाग एक फसली क्षेत्र के अंतर्गत है।

**6. दो फसली क्षेत्र :–**

दो फसली क्षेत्र भूमि उपयोग प्रारूप के अंतर्गत विशेष महत्वपूर्ण माना जाता है। दो फसली क्षेत्र का अनुपात किसी क्षेत्र विशेष के कृषि विकास की गहनता को व्यक्त करता हें दो फसली क्षेत्र का उच्च अनुपात कृषि के उच्चतर विकास को विशेष रूप

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

से प्रदर्शित करता है। हनुमना विकासखण्ड में 17254 हेक्टेयर भूमि दो फसली क्षेत्र के अंतर्गत आती है, जो हनुमना विकासखण्ड के कुल कृषित क्षेत्र का 27.66 प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र में दो फसली क्षेत्र का राजस्व निरीक्षक वार वितरण एक समान नहीं पाया जाता, जैसा कि निम्नांकित सारणी क्रमांक 2.9 से स्पष्ट होता है–

**सारणी क्रमांक–9**

**हनुमना विकासखण्ड में दो फसली भूमि का क्षेत्रीय वितरण 2022**

| क्र. | रा.नि.मं. | दो फसली क्षेत्र हैक्टरॉन | रा.नि.मं. के शुद्ध बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | पहाड़ी | 3000 | 34.62 |
| 2. | शाहपुर | 3506 | 42.00 |
| 3. | खटखरी | 2854 | 28.36 |
| 4. | हनुमना | 3110 | 35.54 |
| 5. | पिपराही | 4789 | 36.03 |
| **योग हनुमना वि.खं.** | | 17259 | 35.14 |

सारणी क्रमांक–9 से स्पष्ट होता है कि हनुमना विकासखण्ड में दो फसली क्षेत्र का कुल रकवा 17259 हेक्टेयर है, जो अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का 35.14 प्रतिशत भाग है। अन्य क्षेत्रों की भाँति दो फसली रकवे में क्षेत्रीय भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। अध्ययन क्षेत्र की शाहपुर राजस्व निरीक्षक मण्डल में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का 42 प्रतिशत भाग दो फसली क्षेत्र के अंतर्गत है, जो हनुमना विकासखण्ड की सभी राजस्व निरीक्षक मण्डलों में सबसे अधिक है। जबकि पहाड़ी रा.नि.म. में सबसे कम 34.62 प्रतिशत दो फसली क्षेत्र है। इस रा.नि.मं. दो फसली की न्यूनता का प्रमुख कारण सिंचाई की कम सुविधाओं की उपलब्धता है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समय के साथ भूमि की संरचनात्मक व्यवस्था बदल रही है। कई कारक तत्व ऐसे हो गये हैं जो भूमि की उर्वराशक्ति और उत्पादन क्षमता को प्रभावित करते हैं। अध्ययन क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड के अन्तर्गत आने वाले भू–राजस्व क्षेत्र में विविधता है। कुछ स्थानों पर मैदानी मिट्टी है और कुछ स्थानों पर बंजर भू–क्षेत्र हैं। बंजर भू–क्षेत्रों में जल एवं अन्य समस्याओं के चलते एक फसली कृषि की जाती है तो दोमटी मिट्टी वाले मैदानी क्षेत्र में द्वि–फसली खेती होती है। इन क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता औसतन अधिक होती है। और फसलों में विविधता भी होती है। जिस कारण इन क्षेत्रों में कृषि कार्य लाभकारी होती हैं। जिसका प्रभाव क्षेत्रीय उन्नति पर स्पष्ट दिखाई देता है।

**संदर्भ स्रोत :–**

[1]. मीनू चौरसिया, रीवा जिला के नईगढ़ी विकासखण्ड के कृषि का सूक्ष्म स्तरीय नियोजन, शोध ग्रन्थ, अ.प्र.सि.वि.वि. रीवा, 2014

[2]. रामपाल एवं बृजनाथ श्रीवास्तव, व्यावहारिक भूगोल, किताबघर, आचार्य नगर कानपुर, 1978, पृ. 210–211

[3]. जिला जनगणना पुस्तिका जिला रीवा, 1991 एवं 2001, विश्लेषणात्मक विवरण

[4]. कार्यालय स. अधीक्षक भू–अभिलेख–तहसील हनुमना से प्राप्त जानकारी वर्ष–2022

[5]. क्षेत्रीय सर्वेक्षण वर्ष 2022 पर आधरित